विवेक मिश्र

# घड़ा

विशाल उठकर बिस्तर पर बैठ गए। उनके माथे पर पसीने की बूँदें चमक रही थीं। विशाल तेज़ी से बेडरूम से निकल कर ड्राईंगरूम में आ गए। शीतल फ़ोन पर बात करने में व्यस्त थीं। विशाल ने कमरे के कोने में रखे घड़े को उठाया और ड्राईंगरूम से निकल कर लॉन में आ गए। शीतल भी विशाल के पीछे-पीछे बाहर आ गईं। वह विशाल से कुछ कह पातीं तब तक विशाल ने उस बड़े राजस्थानी घड़े को, जिस पर कच्चे पर चटक रंगों से फूल-पत्तियाँ और बेल-बूटे बने थे, ज़ोर से ज़मीन पर दे मारा।

विशाल हाँफ़ रहे थे और शीतल उनकी बाँह पकड़े हतप्रभ खड़ी थी। घड़े के छोटे-छोटे टुकड़े लॉन में बिखर गए थे।

आज जब विशाल घर लौटे थे तब वह बहुत ख़ुश थे और शीतल का हाल जानने के लिए उत्सुक लग रहे थे। विशाल ने घर आते ही पूछा था, "क्या कहा डॉक्टर ने?"... "कैसा है बेबी?, ... सब नार्मल तो है न?" शीतल ने आश्वस्ति के भाव चेहरे पर लाते हुए कहा था "हाँ सब ठीक ही है, वज़न, ब्लड प्रेशर ... आज अल्ट्रा साउंड भी करवाया ... सचमुच विशाल, कैसा विचित्र अनुभव है, अपने ही भीतर पलते बच्चे की तस्वीर स्क्रीन पर देखना, उसके छोटे-छोटे हाथ-पैर, पैर तो ऐसे चल रहे थे जैसे उसे मालूम हो कि हम उसे देख रहे हैं। कितना अजीब लगता है अपने भीतर एक और दिल को धड़कते हुए देखना, मैं तो अपने आँसू नहीं रोक सकी, ... बस अब मैं उसे देखना चाहती हूँ"।

विशाल की आँखें उत्सुकता और कौतुहल से भरी थीं। उन्होंने शीतल को बीच में ही रोक कर पूछा... "कोई समस्या तो नहीं है, सब ठीक है न?, ... काश मैं भी तुम्हारे साथ चल पाता, ... एनी वे, फ़ाईनली क्या कहा डॉक्टर ने?"

शीतल ने विशाल के कन्धे पर टँगे बैग को उतारते हुए कहा... "डॉक्टर ने कहा बेबी बिल्कुल ठीक है, बस थोड़ा खाने-पीने का ध्यान रखना है, ... मौसम बदल रहा है न, और मेरा गला भी कुछ ठीक नहीं, इसलिए ठंडी चीज़ें खाने और फ़्रिज का पानी पीने को मना किया है"।

शीतल ने कमरे के कोने में रखे एक नए राजस्थानी घड़े की ओर इशारा करते हुए कहा... "देखो,

हास्पिटल से लौटते हुए मैं यह घड़ा भी ले आई, अब इसी का पानी पियूँगी"।

विशाल की दृष्टि घड़े पर पड़ते ही उन्हें ऐसा लगा जैसे उनकी आँखों में कुछ चुभ रहा हो। कमरे के कोने में रखे मिट्टी के घड़े पर कच्चे पर चटक रंगों से फूल-पत्तियाँ बनी थीं। शीतल ने विशाल की ओर देखते हुए पूछा, "सुन्दर है न?"

विशाल ने कोई जवाब नहीं दिया, सिर्फ़ शीतल की ओर देखा, एक बार फिर घड़े को देखा और बेडरूम की ओर बढ़ गए। उनके पीछे शीतल भी बेडरूम में आ गई। शीतल ने पूछा "क्या हुआ तुम्हें?"

विशाल ने थोड़ा रुक कर उत्तर दिया, "तुम भी कमाल करती हो, आजकल पानी पीने के लिए कौन घड़ा घर में रखता है ... वो भी इतना बड़ा! कुछ भी उठा लाती हो। फ़्रिज का पानी नहीं पीना था तो एक छोटी सी सुराही ले आती, ... पर यह इतना बड़ा फूल-पत्तियों वाला राजस्थानी घड़ा, ... हटाओ इसे वहाँ से"।

शीतल बिना कुछ कहे विशाल को देखती रह गई। विशाल, जो ऐसे समय में शीतल का हर तरह से ध्यान रख रहे थे। बच्चे के जन्म का उन्हें शीतल से भी अधिक बेसब्री से इंतज़ार था। उन्होंने ख़ुद अपने हाथों से बेडरूम में चारों ओर गोल-मटोल, गोरे-काले-साँवले, हँसते-रोते कई बच्चों के चित्र लगाए थे, ... पर आज, अचानक एक घड़े को लेकर विशाल का इस तरह ग़ुस्सा होना, शीतल को कुछ समझ नहीं आया। वह बेडरूम से बाहर आ गई। विशाल कपड़े बदल कर बेडरूम में ही लेट गए। ऐसे समय में जब वह अपनी पत्नी का इतना ध्यान रख रहे थे, उन्हें भी इस तरह शीतल से बोलना अच्छा नहीं लगा था। पर...वह घड़ा, जिसपर कच्चे पर चटक रंगों से फूल-पत्तियाँ बनीं थीं, उनकी आँखों में अभी भी चुभ रहा था। विशाल ने आँखें बन्द करलीं, पर अब भी वह उनकी आँखों के सामने था और उन्हें बार-बार एक ऐसे गहरे कुँए में खींचे ले जा रहा था जिसकी गहराईयों में झिलमिलाते पानी पर उन्हें ऐसा ही राजस्थानी बड़ा मिट्टी का घड़ा दिखाई देता, जिसपर कच्चे रंगों से फूल-पत्तियाँ बने थे, वह उस गहरे कुँए के गंदले पानी की सतह पर ऐसे हिलते-डुलते हुए तैरता, जैसे ख़ुद को डूबने से बचाना चाहता हो, पर धीरे-धीरे उसमें पानी भरने लगता और उस घड़े से हाँफ़ती,